धन बरसाने वाले मास - चातुर्मास

चातुर्मास खुद को पढ़ने, समझने और अन्य प्राणियों को अभयदान देने का अवसर है यह सर्वविज्ञ है कि बारिश में बड़ी संख्या में सूक्ष्म जीव जंतु पैदा हो जाते है, अत: इस दौरान हम हर हिंसा से चाहे वह शारीरिक, मानसिक, वाचनिक और भावनात्मक हिंसा ही क्यों न हो, से बचने का प्रयास करते हैं।

इन दिनों कठिन व्रतों से लोग जीवन को मर्यादित और संयमित रखने का प्रयास करते है, चातुर्मास सैकड़ो जिज्ञासाओं को शांत करने का सुअवसर, स्वधर्म के कल्याण की अलख जगाते, जीव दया की ओर उन्मुख करते जिनवाणी से परिचित होने का काल, सम्यक ज्ञान दर्शन चास्त्रि की पाटी पढ़ाते ये मास कई धार्मिक शैक्षिक शिविरों के जन्मदात्री भी है । चातुर्मास का संयोग हमारी मन:स्थिति में भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्य वृत्तियों में बदलने का कार्य करता है। इन दिनों अपने द्वारा की गई भूलों को सुधार, जीवन को मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाने का प्रयास करते है ।

जैन शास्त्रों में आषाढ़ी चौमासा का विशेष उल्लेख है। व्यवहार में भी इसी को चौमासा के रूप में ख्याति मिली है । चौमासे का महत्व आध्यात्मिक जगत के साथ ही साथ लौकिक जगत में भी है, पानी की वृद्धि यानि लौकिक समृद्धि का आधार ।

यह तो सर्वविदित है कि साधुओं का विशेषतर जैन साधुओं का कोई स्थाई ठोर ठिकाना नहीं होता। वह जन कल्याण और समाज कल्याण की भावना संजोये वर्ष भर एक जगह से दूसरी जगह पैदल भ्रमण करते हुए श्रावक श्राविका को धर्म, अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य का विशेष ज्ञान देते है। चातुर्मास का समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊँचाईयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है। अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडण्डी है जिस पर बढ़कर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते है।

शरीर अंतरात्मा का सुंदर मंदिर है। जब शरीर के साथ हमारे भाव और विचार अच्छे हो जाये तो यह जीवन सार्थक बन जाता है । चातुर्मास में एक एक क्षण का उपयोग ध्यान, उपासना, आराधना और साधना में होना चाहिए ।

ताकि साल भर में जो ऊर्जा क्षरित होती है उसका पुर्नभरण हो सके और आने वाले आठ माहों के लिए हम जगत के लिए कुछ दे पाने की स्थिति में आ सके ।

भावन्तों ने चातुर्मास काल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया । हमारे और प्रभु के बीच सीधे संबंध जोड़ने की तीव्र इच्छा के साथ रमने में ही चातुर्मास की सार्थकता है । इसमें लोक की बजाय ईश्वरीय आलोक से सीधा संबंध स्थापित करने का भरपूर प्रयास होना चाहिए । जो एकांत सेवन करते है वह अपनी आत्मा रुपी परमात्मा के अधिक निकट होते है मूलत: चातुर्मास ईश्वरत्व को पाने का यह समय है जिसमें किसी संसारिक कामना से कोई संबंध नही, इसी कारण चातुर्मास में दूसरे सभी मंगल कार्य वर्जित होते है, लेकिन **आज के चातुर्मास सुवर्ण वृष्टि मास बनकर रह गये है** – आज के चातुर्मास की स्थापना और चौमासा आश्चर्यचकित करते है । कलश स्थापना के समय ऐसा लगता है जैसे कुबेर का खजाना ही खुल गया हो, सभी जगह यह चर्चा होती है कि अमूक महाराजजी के चौमासा में इतने करोड़ की बोली ली गई। हजारो लोगों के सामने अपनी समृद्धि का प्रदर्शन बढ़ चढ़कर होता है लेकिन कभी कभी उस राशि के वसूलने के लिए आयोजकों को दांतो पसीना आ जाता है, करोड़ो रुपये कहां से आते है और उनका कहां कहां उपयोग और कितना सार्थक उपयोग होता है यह भी सोचने का प्रश्न है ? हम समाज के लोग भी एक ही व्रत को धारण करने वालो के साथ भिन्न भिन्न व्यवहार करते है : जिन साधुओं के साथ जनसैलाब नहीं, प्रवचन की कला नहीं, अपनी ओर आकर्षित करने का हुनर नहीं उनके चातुर्मास स्थापना में नारियल भेंट करने वालों का भी टोटा रहता है ।

चातुर्मास के दौरान बैण्ड बाजों की धुन, ढोल नगाड़ों का शोर, अनुष्ठानों की भरमार, धर्म एवं विभिन्न प्रकार के सामूहिक आयोजनों में बेशुमार खर्चे चातुर्मास की मूल भावना और उसके लक्ष्य को ही समाप्त कर रहा है । दुनिया जहान के शोर गुल से दूर इन चार माहों की पूरी तरह ईश्वरीय निष्काम साधना में समर्पित कर देने के लिए ही हमारे ऋषि मुनियों आचार्यों ने चातुर्मास का विधान किया है लेकिन इन महिनों में और भी बुरा हाल है । माईक, टेंट, फूल से लेकर सभी प्रकार के इंतजामों से जुड़े धंधे वालों के लिए यह स्वर्णिम समय होता है जितने अधिक और बड़े आयोजन उतनी ही अधिक कमाई ।

चातुर्मास के नाम पर श्रद्धालुओं को भुनाना और भी आसान हो गया है । भुनाने वालों को ना तो ईश्वर की परवाह न परम्पराओं की, धर्म से कुछ लेना देना नहीं, सभी चाहते है कि हर क्षण को कैसे अपने हित में भुनाया जाय और मैं समाज का सबसे बड़ा दानवीर और कर्णधार बन जाऊं ।

आज से वर्षों पहले नजर डाले जैन धर्म में किसी तरह का कोई आडम्बर नहीं था, हम वीतरागता में सबके आगे होते हुए भी अब सबसे बड़े रागी बने जा रहे है । हम अपने महाराजों, आचार्यों, ब्रह्मचारियों को भी इनमें उलझाते जा रहे है जिससे उनको आत्मकल्याण में बाधा हो रही है ।

हम सभी को आज चातुर्मास के उद्देश्य लक्ष्य, महत्व को समझने की जरुरत है । चातुर्मास एकांत का स्वर्णिम काल है । जन से जैन बनने का प्रयास है चातुर्मास ।

– साधना जैन, गौतम नगर, भोपाल

संपादकीय

सूरत बदलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए ।
मेरे सीने में नहीं तो, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए ।।

कवि दुष्यंत की इन अमर पंक्तियों ने देश के जनमानस को जहां अपने अधिकारों के प्रति जागरुक कर जोश व नई शक्ति भरी है वही उन्हें अपने कर्तव्यों को निभाकर अपनी समाज को उन्नत बनाने का संकल्प भी करना चाहिए । युवा वर्ग को हमारी संस्कृति व अपने समाज से जोड़ने के लिए हमें मिल जुलकर प्रयास करना होंगे । आधुनिकता की अंधी दौड़ में कहीं हमारे बच्चे अपना कुल, गोत्र व समाज का नाम ही ना भूल जाये ।

सशक्त देश का निर्माण सशक्त समाज से होता है और स्वाभिमानी कुटुम्ब व परिवार ही सशक्त समाज का निर्माण कर पाते है। आज के परिवेश में जब हम सर्वप्रथम अपने परिवार व कुटुम्ब के लिए सोचते हैं उसके पश्चात समाज व देश का विचार करते है ठीक उसी तरह जब हम समाज या संगठन की बात करे तो हमें सर्वप्रथम अपनी मातृसंस्था गोलालारीय समाज के हितों के बारे में सोचना चाहिए आज हम किस स्थिति में है, और क्यों है यह आपसे और हमसे छुपा नहीं है ।

हमने अपने समाज व समाजजनों की उपेक्षा कर अपनी मातृसंस्था (गोलालारीय समाज) को बहुत नुकसान पहुंचाया है । ना जाने क्यों अपनी मातृ संस्था के लिए हमारे मन और मुट्ठियां कम क्यों खुलती है ? अन्य संस्थानों में अपने को गौरवांवित करने के लिए क्षमता से अधिक सहयोग देने की प्रवृति कई समाजजन आज भी कर रहे है। हमें अब विचार करना चाहिए कि क्या ऐसा कर हम अपने समाज के साथ न्याय कर रहे है ?

यह तो वही बात हुई कि अपने परिवार को भूखा रखकर हम पड़ोसी को मिठाई खिला रहे हैं ।

सशक्त समाज के निर्माण के लिये श्रेष्ठीजनों के साथ साथ उन सदस्यों को अवश्य ही मौका मिलना चाहिये जिनके हृदय में समाज के लिए कुछ करने का जज़्बा है उन्हें प्रेरित करें, उन्हें मार्गदर्शन देवे उन्हें वे साधन सुविधाएँ उपलब्ध करावे जिसके आधार पर संगठन को बल मिल सके । क्योंकि जिन संस्थाओं में व्यक्ति सिर्फ पद व नाम के लिये जुड़ते है वे संस्थाएँ ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रह पाती है और जिन संस्थाओं में मित्रता व रिश्तों के आधार पर सदस्यों का चयन होता है उनका आधार सदैव कमजोर रहता है। वे आज के इस दौर में संघर्ष नहीं कर पाने के कारण पिछड़ जाते है ।

अपनी समाज व संगठन को मजबूत करने का यह अर्थ कदापि नहीं लगाना चाहिए कि हम समग्र जैन समाज या समाज के अन्य वर्गों से अलग थलग होकर अलगाव वाद का समर्थन करें । इससे तो अल्पसंख्यक जैन समाज छिन्न भिन्न होकर बिखर जायेगा। सर्वप्रथम हम जैन है और जैन समाज के सभी वर्गों के साथ साथ चलकर स्वयं को भी मजबूत और उन्नत बनाना हमारा उद्देश्य है। इसके लिये हमें जागरूकता, वैचारिक एकता, समर्पण भाव एवं आगे बढ़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति विकसित करने की आवश्यकता है । हमारे बालकों और युवाओं में समाज के प्रति गर्व और स्वाभिमान उत्पन्न करना आज प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य बन जाना चाहिए ।

हमें गर्व है विदिशा गोलालारीय समाज पर जिन्होंने हमें स्वाभिमान का पाठ पुन: याद कराया अल्प अवधि में ही नींव से लेकर शिखर तक सिर्फ समाजजनों के सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण कर अपनी समाज का मान बढ़ाया । समाज कार्यों के लिए एक बीघा जमीन खरीद कर इन्दौर गोलालारीय समाज ने भी अभूतपूर्व कार्य किया है । जबलपुर समाज परिचय सम्मेलन के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वाह कर रही है । इसी तरह अहमदाबाद के युवाओं ने बड़ी मेहनत से गोलालारीय समाज को आज के नवीन संचार माध्यम इंटरनेट से जोड़ने का सफल अभियान चलाया है । हमें अपने पूर्वाग्रह को छोड़कर समाज उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, जहां तक हो सके अपने समाज संगठन को वैचारिक एवं आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहे ताकि संगठन में क्रियाशीलता बनी रहे ।